धन के साथ दर्द नहीं लेकिन दुआएं कमायें

भिलाई। 'खुशी के साथ हल पल' विषय पर अयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए फिल्म अभिनेता सुरेश ओबेराय, सांसद सरोज पाण्डे, क्षेत्रिए संचालिका ब्र.कु.कमला, ब्र.कु.शिवानी, ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई जी तथा ध्यानपूर्वक सुनते हुए शहर के गणमान्य नागरिक।

भिलाई। जो आत्मायें दुआओं से पलती है वह सदा खुश रहती है। उसे परमात्मा की भी दुआयें मिलती है। धन कमाये लेकिन साथ में दर्द न कमायें। दर्द का धन घर वालों को भी दर्द देता है। उक्त उद्गार ब्र.कु.शिवानी बहन ने भिलाई में 'खुशी के साथ हर पल ' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि सदा खुश रहने के लिये 'तीन सी' याद रखें- जीवन में कभी भी क्रिटिसाइज, कम्पैरिजन व कम्पीटिशन न करें। जीवन की रेस में सदैव सामने देखें। इधर-उधर देखकर रीस न करें। पिछले कर्मों का हिसाब-किताब सबका अलग-अलग है। आत्मा में कई जन्मों की रिकार्ड है। वह अनेक संस्कार लेकर आई है। उन्हें देखकर हम अपने अच्छे संस्कार चेंज न करें बल्कि उन्हें भी नये संस्कार बनाने में सहयोग दें। दिन प्रतिदिन आत्मा की शक्ति कम होती जा रही है। राज-योग का अभ्यास मन को शक्तिशाली बनाता है। हमें किसी भी व्यक्ति से अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए क्योंकि इससे हमें जीवन में दर्द ही मिलता है। मेरा फायदा किस बात में है, वह देखना है। नये साल में पुरानी बातें भुल कर नया करने से हेप्पी हो ही जायेंगे।

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता सुरेश ओबेराय ने राजयोग के अभ्यास से अपने जीवन में आये परिवर्तन का अनुभव सुनाया। सर्वप्रथम दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन माननीय अतिथियों द्वारा किया गया। फिर नृत्यधाम की कन्याओं द्वारा राखी राय के निर्देशन में स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया गया। ब्र.कु.युगरत्न ने स्वागत गीत गाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। छत्तीसगढ क्षेत्र की संचालिका ब्र.कु.कमला बहन ने स्वागत भाषण दिया। इन्दौर जोन के निदेशक ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई जी ने भी सभा को सम्बोधित किया। मंच का कुशल संचालन ब्र.कु.प्राची बहन ने किया। कार्यक्रम में सांसद सुश्री सरोज पाण्डे, विधायक बदरुद्दीन कुरैशी, सीईओ एस.चंद्रशेखरन् सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में 15000 से भी अधिक लोगों ने भाग लिया।

साधना के मार्ग की परीक्षायें

ब्र.कु.जगदीश...

.जब कोई साधना के पथ पर चलता है तो उसके सामने बीच-बीच में कई विघ्न भी आ उपस्थित होते हैं। उसे कई परीक्षाओं को भी पार करना होता है। अपने जीवन की आखिरी आध्यात्मिक मंजिल पर पहुंचने के समय तक मनुष्य के सामने छोटी-बड़ी कई समस्यायें भी आती रहती हैं। परन्तु दृढ़ता, धीरज और एक परमात्मा में निश्चय को धारण करने वाला व्यक्ति इन सभी को पार करते हुए आखिर अपने लक्ष्य तक पहुंचने में सफल हो ही जाता है।

परीक्षा-पत्र - स्वार्थियों, निन्दकों आदि द्वारा - ये कलियुगी संसार निन्दकों, चापलूसों, स्वार्थियों और उकसाने वालों से भरा पड़ा है। इसलिए साधना-पथ पर यात्रियों के सामने जो परीक्षायें उपस्थित होती हैं, उनमें से एक परीक्षा के परीक्षा-पत्र बनाने वाले यही लोग होते हैं। ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग के अभ्यास में कौन कितना परिपक्व है और सहनशीलता, धीरज आदि गुणों की किसने कितनी धारणा की है, उसकी एक परीक्षा ऐसे लोगों के द्वारा भी हो ही जाया करती है। मान लीजिए कि एक व्यक्ति, जिसे आप वर्षों तक अपना घनिष्ट मित्र समझते रहे, बार-बार अपने ही स्वार्थ सिद्धि को सर्वोपरि रखता है, जब कभी भी मौका आता है, वह अपना ही काम निकालता है। आप उसे अपना हाल बताते रहते हैं और उसका आतिथ्य भी करते रहते हैं परन्तु उसका व्यवहार आपसे सदा साधारण ही रहा है। तब एक दिन उसकी अमिट स्वार्थ-भावना को देखकर आपको कैसा लगेगा? आपके मन में क्या विचार आयेंगे? अथवा एक व्यक्ति, जिसे आप ज्ञाननिष्ठ मानते हैं, आपकी अनुपस्थिति में आपके विरुद्ध लोगों के कान भरता है, तब आपको कैसा लगेगा? इसी प्रकार कोई वरिष्ठ योगाभ्यासी जिसमें आपकी श्रद्धा है, समय पर आपके हित की अवहेलना करे अथवा आपसे न्याय करता हुआ प्रतीत न हो तब आपके मन में उसके प्रति क्या विचार उठेंगे? तभी तो पता लगेगा कि आपके मन में आनंद, शांति, प्रेम, उत्साह, उमंग, ज्ञान, योग, सद्गुण टिके रहते हैं या गर्म तवे पर पानी की तरह से भाप बनकर उड़ जाते हैं। फिर संसार में स्वार्थी, निन्दक, न्याय रूपी गुण में कमजोर लोग तो बहुत हैं। अत: एक नहीं, अनेक बार ऐसी परीक्षायें आपके जीवन में आती रहेंगी और अगर अभी तक नहीं आयीं तो आगे चलकर आयेंगी।

परीक्षा - पढ़ाई और परिपक्वता का साधन है - कौन है जिसके जीवन में ऐसी परीक्षायें नहीं आतीं? किसी के जीवन में आज परीक्षा आती है तो अन्य किसी के जीवन में एक वर्ष के बाद। परन्तु, यह एक पढ़ाई है और पढ़ाई में से उत्तीर्ण अथवा पारंगत होने के लिए प्रैक्टिकल परीक्षा तो देनी ही पड़ती है। ये परीक्षायें केवल हमारी परिपक्वता को मापने का ही साधन नहीं होतीं बल्कि हमारे जीवन को मोड़ देने वाली, हमें अनुभवी और मजबूत बनाने वाली और हमारे कई अवांछित परन्तु पक्के संस्कारों को तोड़-तोड़ कर हमारा रास्ता साफ करने वाली भी होती हैं। मान लीजिए कि किसी ज्ञानी और योगी आत्मा के साथ आपका स्नेह है परन्तु उसका स्नेह अपने स्वार्थ ही के साथ है अथवा मान लीजिए कि आपकी किसी वरिष्ठ अधिकारी से न्याय होने की पूरी उम्मीद थी परन्तु आपको परिणाम इसके विपरीत ही देखने को मिलते हैं तो इनमें से प्रथम वृत्तान्त का फल यह होगा कि आपके मन को इस सत्यता का बोध होगा कि एक परमात्मा ही मन का सच्चा मीत है और कि मनुष्य तो अपने ही स्वार्थ-सिद्धि के प्यासे हैं और दूसरे वृत्तान्त के परिणामस्वरूप आप सोचेंगे कि सच और झूठ का सच्चा-सच्चा इंसाफ करने वाला तो एक परमपिता परमात्मा ही है। इन दोनों में से हरेक वृत्तान्त का मधुर फल यह होगा कि परमात्मा से आपकी प्रीति और पक्की होगी और 'मन्मनाभव' रूपी जो मंत्र है उसका अर्थ अब आप केवल भली भांति समझेंगे ही नहीं बल्कि उसमें टिकेंगे भी और उसमें आपका कल्याण हो जायेगा। इस प्रकार की परीक्षायें परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से हमारी पढ़ाई की परिपक्वता का साधन हैं। जब ये सामने आती हैं तब लगता तो ऐसे ही हैं कि ये हमारे मन को मरोड़ रही हैं परन्तु टेढ़ी चारपाई को सीधा करने के लिए उसके कोनों पर जोर तो देना ही पड़ेगा।

वास्तव में परमपिता परमात्मा ने तो हमें ये शिक्षा दे ही दी है कि न्यारे और प्यारे होकर चलो। उन्होंने हमें केवल न्यारे होने की शिक्षा नहीं दी, न ही केवल प्यारे होने की शिक्षा दी है। जब हम न्यारेपन और प्यारेपन का संतुलन नहीं सीख पाते तब कुछ परीक्षायें आकर हमें झकझोर कर सिखाने की कोशिश करती हैं।

यही बात निन्दा के विषय में भी ली जा सकती है। जिन्हें आनंद रस प्राप्त नहीं होता वे निन्दा रस के व्यसनी बन जाते हैं। आज नहीं तो कल हरेक की सच्ची या झूठी निन्दा होती ही है। निन्दा सच्ची हो या झूठी, इसका दोनों में से कोई भी रूप मनुष्य को प्रिय नहीं है। अपनी

शेष पृष्ठ 8 पर

छिंदवाड़ा। नवनिर्मित सेवाकेंद्र 'विश्व दर्शन भवन' का उद्घाटन करते हुए रमेश मिगलानी, सीता राम डहेरिया, नरेश साहू, ब्र.कु.भावना बहन तथा अन्य।

महेश्वर। पार्श्व गायक कलाकार नीतिन मुकेश को ईश्वरीय सौगात भेंट कर सम्मानित करते हुए ब्र.कु.अनिता बहन, ब्र.कु.सारिका बहन तथा अन्य।

शांति सरोवर, रायपुर। फिल्म अभिनेता सुरेश ओबेराय अपने जन्मदिन का केक काटते हुए साथ में हैं क्षेत्रिए संचालिका ब्र.कु.कमला, ब्र.कु.शिवानी, ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई तथा अन्य।

अलीगढ़। 'परमात्म अनुभूति भवन' का उद्घाटन करते हुए सांसद राजकुमारी चौहान तथा साथ में है ब्र.कु.शीला।

वसंतकुंज, दिल्ली। 'फेस टू फेस' डीवीडी का उद्घाटन करते हुए टी.सीरिज के एम.डी. दर्शन कुमार, डॉ.अवधेश, ब्र.कु.उर्मिल।

वोयसर। पूर्व क्रिकेटर कपिल देव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.नम्रता बहन, ब्र.कु.चारू बहन तथा अन्य।